पाठ - 4

नीति-धारा

गिरिधर

कवि परिचय - गिरिधर के जीवन और समय के सम्बंध में कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। आपने अधिकांश कुण्डलियाँ अवधी भाषा में लिखी हैं । इससे अनुमान लगता है कि ये इलाहाबाद के आस-पास के रहने वाले थे और भाट जाति के थे । शिवसिंह सेंगर ने इनका जन्म सन् 1713 तथा रचनाकाल 18 वीं सदी माना है। आपकी कुण्डलियाँ हस्त लिखित पोथियों के रूप में मिलती हैं। जिनके दस संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। सबसे बड़े संग्रह में 457 कुण्डलियाँ हैं। इन्होंने कुछ दोहे, सोरठे और छप्पय भी लिखे।

जन-जीवन में कवि गिरिधर के बहुत अधिक प्रचार का कारण इनका दैनिक जीवन के लिए उपयोगी एवं महत्वपूर्ण बातों का सरल और सीधी भाषा-शैली में कथन है। इनमें अपने अनुभव पर आधारित नई बातों के साथ पारम्परिक कथन भी है।

भोलानाथ तिवारी ने 'हिन्दी नीति काव्य संग्रह' में पर्याप्त मात्रा में नीति-काव्य लिखने वाले कवियों में इनकी गणना की है।

कवि परिचय - आधुनिक हिन्दी साहित्य के जन्मदाता और भारतीय नवोत्थान के प्रतीक हरिश्चन्द्रजी का जन्म सन् 1850 ई. को काशी में हुआ था। आपने अपनी प्रतिभा, कुशाग्र बुद्धि और अद्‌भुत स्मरण-शक्ति के बल पर मराठी, बंगला, गुजराती, मारवाड़ी, पंजाबी, उर्दू आदि अनेक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। लम्बे देशाटन से उन्होंने कई स्थलों के स्थानीय जीवन-क्रम एवं वहाँ की साहित्यिक गतिविधियों का अध्ययन किया। देश-प्रेम, मातृभाषा - हिन्दी प्रेम तथा इनके विकासार्थ की गईं सेवाओं के कारण सन् 1880 ई. में आपको 'भारतेन्दु' की उपाधि से विभूषित किया गया। 06 जनवरी 1885 ई. को पैंतीस वर्ष की अल्पायु में ही आपका गोलोकवास हो गया।

भारतेन्दु जी का काव्यक्षेत्र व्यापक है। भक्ति और शृंगार आपकी कविता का प्रधान रस है। भाव-प्रवणता, देश-प्रेम और समाज-सुधार का स्वर आपकी रचनाओं में बहुत सशक्त है। आपका शृंगार रीतिकालीन कवियों से भिन्न एवं शिष्ट है। राष्ट्र-प्रेम-भाव आपके हृदय सिंधु में हिलोरें मारता है। आपकी रचनाएँ छन्दबद्ध हैं। छप्पय, कुंडलियाँ, हरिगीतिका आदि अनेक छन्दों का प्रयोग आपकी रचनाओं में हुआ है। आपने लोकछन्दों - लावनी, ख्याल और कजरी का भी उपयोग किया है। काव्य भाषा ब्रज है, किन्तु शनैः-शनैः आपने खड़ी बोली-काव्य को जन्म दिया, सजाया और सँवारा है। लोकोक्तियाँ और मुहावरों का यथास्थान प्रयोग कर अलंकारिक शैली को अपनाया है। उपमा, रूपक, अनुप्रास और श्लेष आपके प्रिय अलंकार हैं।

आपके द्वारा 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका', 'नवोदिता', तथा 'बाल-बोधिनी', आदि पत्रों का प्रकाशन किया गया। प्राचीन और नवीन युग के संधि-स्थल पर दोनों युगों के उपयोगी विचारों का आपने उदारता-पूर्वक स्वागत किया।

भारतेन्दुजी की मौलिक नाट्य - रचनाओं में 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', 'चन्द्रावलि नाटिका', 'विषस्य विषमौषधम्', 'भारत दुर्दशा', और 'अंधेर नगरी' प्रसिद्ध हैं। 'पूर्ण प्रकाश' और 'चन्द्रप्रभा' आपके प्रसिद्ध सामाजिक उपन्यास हैं। आपकी अनेक काव्य कृतियों में भक्ति-प्रेम, शृंगार और नीति सम्बन्धी रचनाएँ हैं। 'प्रेम माधुरी', 'प्रेम सरोवर', 'प्रेमतरंग', 'प्रेमप्रलाप', 'सुन्दरी तिलक (सवैया संग्रह)' और 'पावस भक्ति संग्रह' प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। वे पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण, हिन्दी के प्रति उदासीनता और भारतीय जीवन की बुराइयों के प्रबल विरोधी, देशभक्त कवि थे।

भारतेन्दुजी युगान्तकारी रचनाकार थे। हिन्दी उन्नायकों में आपका स्थान सर्वोच्च है।

केन्द्रीय भाव

नीतिकाव्य जीवन-व्यवहार को सुगम बनाने का आधार है। नीतिकाव्य सृजित करने में व्यावहारिक अनुभवों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। व्यक्ति इन अनुभवों को स्वयं के क्रिया-कलापों से तथा दूसरों के द्वारा अर्जित एवं कहे गए मन्तव्यों से ही अर्जित करता है। स्वयं द्वारा अर्जित अनुभवों से यद्यपि व्यक्ति आत्म निर्भर और संघर्षशील बनता है, तथापि दूसरों के अनुभव उसे सहजतापूर्वक जीवन को समझने में सहायक होते हैं। यह अनुभव यदि काव्य के रूप में होते हैं, तो वे मुहावरों जैसे हो उठते हैं। अधिकांश नीति कथन परक उक्तियों में जो सुग्राह्यता और सरसता है, वह उन्हें मुहावरों की कोटि में ले जाने वाली है। हजारों वर्षों से नीति परक उक्तियाँ मनुष्य को जीवन के अँधेरों में प्रकाश की किरण बनकर उसे मार्ग दिखाती रही हैं, जीवन जीने का तरीका सिखाती रही हैं। इस स्तर पर नीति काव्य शिक्षा के उद्देश्य को पूर्ण करने वाला बन जाता है। नीतिकाव्य जीवन सुधार का लक्ष्य लेकर चलता है। नीति काव्य का विचार पक्ष प्रबल होता है। एक तरह से नीतिकाव्य सद्विचारों का कोष है। युगानुरूप आचरण की शिक्षा भी नीतिकाव्य प्रदान करता है। नीतिकाव्य का एक उद्देश्य उच्च सामाजिक मूल्यों की स्थापना करना भी है। इस तरह से नीति काव्य व्यक्ति और समाज के उन्नत अनुभवों का संप्रसारण करने वाला काव्य है।

हिन्दी साहित्य में नीतिकाव्य की लंबी परम्परा है। प्राय: प्रत्येक कवि ने अपने अनुभवों को इस तरह से नीति कथनों में सँजोया है भले ही ऐसी उक्तियाँ अधिक न हों। किन्तु यह निश्चित है कि सभी युगों का काव्य अपने नीति कथनों के कारण पाठक के जीवन संघर्षों को कम करने में सक्षम रहा है। तुलसी, कबीर, सूर, जायसी आदि भक्तिकालीन कवियों ने नीतिकथनों को महत्व प्रदान किया है। इस युग में रहीम और गिरिधर जैसे कवि भी सक्रिय रहे हैं, जिनकी कविता में नीति का स्थान केन्द्रीय है।

गिरिधर कविराय ने अपनी कुंडलियों में तो जैसे नीति को ही महत्व प्रदान किया है। उनकी कुंडलियाँ तो नीति के अमृतघट हैं। जीवन के अनेक अनुभवों की उन्होंने कुंडलियों में सँजोया है। प्रस्तुत कुंडलियों में उन्होंने अतीत की असफलताओं से बार-बार दुखी न होने के लिए कहा है। कर्मचेतना के सूत्र वर्तमान को महत्वपूर्ण मानने में छिपे हैं। अपने द्वारा किए गए कामों का ढ़िढोरा नहीं पीटना चाहिए। यदि असफलता हाथ लगती है तो संसार हँसी करने लगता है। प्रत्येक कार्य करने के पूर्व विचार कर लेना जरूरी है। जो बिना विचारे और बिना पूर्व योजना बनाए कार्य करते हैं – वे अक्सर अपने कार्य में विफल हो जाते हैं और परेशान होते हैं। सम्पत्ति के बढ़ने पर अभिमान नहीं करना चाहिए। अपने भीतर गुणों को विकसित करके समाज में सम्मान पाया जा सकता है।

आधुनिक युग में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र बहुआयामी रचनाकार हैं। उन्होंने नाटक, काव्य, निबंध आदि सभी विधाओं में रचना की है। ये समाजोन्मुखी चिंतक कवि हैं, इसलिए उनकी कविताओं में नीतिकथन यत्र-तत्र सर्वत्र सुलभ हैं। संकलित दोहों में उन्होंने स्पष्ट किया है कि केवल पद पाने से प्रतिष्ठा नहीं मिलती है। परोपकार करने पर ही सम्मान मिलता है। एकता का ही महत्व है, कठिन से कठिन काम एकता से संभव हो जाते हैं। भारत के विकास के लिए भारतवासियों को वैर-भाव छोड़ना होगा। अपनी भाषा, अपना धर्म ही सुख देने वाले हैं। जहाँ योग्यता और अयोग्यता को समझने का विवेक न हो वहाँ सुख और समृद्धि नहीं रह पाते। नीति काव्य के इन सभी अंशों में सहज उक्तियों का वैभव फैला हुआ है।

गिरिधर की कुंडलियाँ

बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ।
जो बनि आवै सहज में, ताही में चित्त देइ॥
ताही में चित्त देइ, बात जोई बनि आवै।
दुर्जन हँसे न कोइ, चित्त में खता न पावै॥
कह गिरिधर कविराय, यहै करु मन - परतीती।
आगे की सुख समुझि, हो, बीती सो बीती ॥1॥

साईं अपने चित्त की, भूलि न कहिए कोइ।
तब लग मन में राखिए, जब लग कारज होइ॥
जब लग कारज होइ, भूलि कबहूँ नहिं कहिए।
दुरजन हँसे न कोई आप सियरे ह्वै रहिए ॥
कह गिरिधर कविराय, बात चतुरन की ताईं।
करतूती कहि देत, आप कहिए नहि साईं ॥2॥

बिना बिचारे जो करे, सो पीछे पछिताय ।
काम बिगारै आपनो, जग में होत हँसाय॥
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न पावै।
खान पान सनमान, राग-रंग मनहिं न भावै॥
कह गिरिधर कविराय, दुःख कछु टरत न टारे।
खटकत है जिय माहिं, कियो जो बिना बिचारे॥3॥

दौलत पाय न कीजिए, सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को, ठाउँ न रहत निदान॥
ठाउँ न रहत निदान, जियत जग में जस लीजै।
मीठे वचन सुनाय, विनय सबही की कीजै॥
कह गिरिधर कविराय, अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निसि दिन चारि, रहत सबही के दौलत॥4॥

गुन के गाहक सहस नर, बिनु गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय ॥
शब्द सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को इक रंग, काग सब भए अपावन॥
कह गिरिधर कविराय, सुनो हो ठाकुर मन के।
बिनु गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुन के॥5॥

- गिरिधर

नीति अष्टक

मान्य योग्य नहिं होत कोऊ कोरो पद पाए।
मान्य योग्य नर ते जे केवल परहित जाए ॥1॥

बिना एक जिय के भए, चलिहैं अब नहिं काम ।
तासों कोरो ज्ञान तजि उठहु छोड़ि बिसराम ॥2॥

बैर फूट ही सों भयो सब भारत को नास ।
तबहुँ न छाड़त याहि सब बँधे मोह के फाँस ॥3॥

कोरी बातन काम कछु चलिहैं नाहिन मीत ।
तासों उठि मिलि के करहु बेग परस्पर प्रीत ॥4॥

निज भाषा, निज धरम, निज मान करम ब्यौहार ।
सबै बढ़ावहु बेगि मिलि कहत पुकार – पुकार ॥5॥

करहुँ बिलम्ब न भ्रात अब उठहु मिटावहु सूल ।
निज भाषा उन्नति करहु प्रथम जो सबको मूल ॥6॥

सेत सेत सब एक से जहाँ कपूर कपास ।
ऐसे देस कुदेस में कबहुँ न कीजै बास ॥7॥

कोकिल वायस एक सम पण्डित मूरख एक।
इन्द्रायन दाड़िम विषय, जहाँ न नेक विवेक ॥8॥

– भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

◆◆◆

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. गिरिधर के अनुसार हमें क्या भूल जाना चाहिए ?
2. कोयल को उसके किस गुण के कारण पसंद किया जाता है ?
3. गिरिधर द्वारा प्रयुक्त छंद का नाम लिखिए।
4. व्यक्ति सम्मान योग्य कब बन जाता है।
5. भारतेन्दु के अनुसार भारत की दुर्दशा का प्रमुख कारण क्या है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. कवि गिरिधर के अनुसार अपने मन की बात को कब तक प्रकट नहीं करना चाहिए ?
2. धन-दौलत का अभिमान क्यों नहीं करना चाहिए ?
3. कवि ने गुणवान के महत्व को किस प्रकार रेखांकित किया है ?
4. भारतेन्दु जी ने कोरे ज्ञान का परित्याग करने की सलाह क्यों दी है ?
5. सम्माननीय होने के लिए किन गुणों का होना आवश्यक है ?
6. 'उठहु छोड़ि बिसराम' का आशय स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. बिना विचारे काम करने में क्या हानि होती है ? समझाइए ।
2. कौआ और कोयल के उदाहरण से कवि जो सन्देश देना चाहता है उसे अपने शब्दों में लिखिए।
3. पाठ में संकलित भाषा संबंधी दोहों के माध्यम से भारतेन्दुजी क्या सन्देश देना चाहते हैं ?
4. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की काव्य प्रतिभा पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए ।
5. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

(अ) ''बिना बिचारे जो करे सो पीछे पछिताय।
× × ×
खटकत है जिय माहि, कियौ जो बिना बिचारे॥''

(ब) ''गुन के गाहक सहस नर बिनु गुन लहै न कोय।
× × ×
बिनु गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुन के ॥''

(स) ''मान्य योग्य नहिं होत कोऊ कोरो पद पाए ।
मान्य योग्य नर ते जे केवल परहित जाए ॥''

(द) ''बैर फूट ही सों भयो सब भारत को नास।
तबहु न छाड़त याहि सब बँधे मोह के फाँस॥''

ध्यान दीजिए -

यह भी जानें -

आपने गिरिधर की कुंडलियाँ पढ़ी। गिरिधर की कुंडलियों में आप मात्राएँ गिनकर देखिए -

ऽऽ ऽ। । ऽ । ऽ ऽऽऽ ।। ऽ।   (13+11=24) दोहा छंद

''बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ।
जो बनि आवै सहज में, ताही में चित्त देइ॥

ऽऽऽ ।। ऽ। ऽ। ऽऽ।। ऽऽ   (11+13=24) रोला छंद

ताही में चित्त देइ, बात जोई बनि आवै।
दुर्जन हँसे न कोइ, चित्त में खता न पावै॥
कहै गिरिधर कविराय, यहै करू मन-परतीती।।
आगे की सुख समुझि हो, बीती सो बीती॥

उपर्युक्त प्रथम दो पंक्तियों में 13 व 11 पर यति है, आप जानते हैं, कि इसे दोहा छंद कहते हैं। कुंडलियाँ की तीसरी पंक्ति का प्रथम चरण दोहा छंद के अंतिम चरण की पुनरावृत्ति है, अत: बाद की चार पंक्तितयों में 11-13 पर यति है, 11-13 पर यति होना, पंक्ति में कुल 24 मात्राओं का आना तथा अंत में दो गुरु का होना, इसे रोला छंद बनाता है, अत: हम कह सकते हैं कि -

रोला छंद - दोहा और रोला छन्द मिलकर कुण्डलिया छन्द बनता हैं इसमें दोहा का अन्तिम चरण रोला का प्रथम चरण होता है कुण्डलिया जिस शब्द से प्रारंभ होता है उसी शब्द से समाप्त होता है।

यह भी जानें -

''करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस देश की।
हे मातृभूमि ! तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की ॥''
उपर्युक्त पंक्तिया उल्लाला छंद का उदाहरण है।

उल्लाला - यह एक मात्रिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 15 व 13 की यति पर कुल 28 मात्राएँ होती हैं। इसे उल्लाला छंद कहते हैं।

प्रश्न - 'उल्लाला' को परिभाषित करते हुए उदाहरण सहित समझाइए।

योग्यता विस्तार

1. अन्य कवियों की नीति संबंधी काव्य पंक्तियाँ खोजकर लिखिए।
2. अपने शिक्षक की सहायता से- संयोग श्रृंगार, वियोग श्रृंगार, हास्य, करुण एवं वीर रस के उदाहरणों की सूची तैयार कीजिए।
3. अपनी कक्षा की दीवारों पर कुछ नीति सम्बन्धी दोहे कार्ड शीट पर लिखकर लगाइए।
4. कक्षा में स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता आयोजित कीजिए।

शब्दार्थ

बिसारि दे = भुलादे। **सुधि**=याद। **खता**=दु:ख। **परतीती**=विश्वास। **कारज**=कार्य काम। **सियरे**=ठंडा, शांत। **करतूती**=कर्म। **पाहुन**=अतिथि। **दौलत**=धन, सम्पत्ति। **सहस**=हजार।

बिसराम=विश्राम। **फाँस**=फंदा। **वेग**=तुरन्त। **विलम्ब**=देरी। **सूल**=शूल, काँटा। **सेत**=सफेद। **कुदेस** = बुरादेश। **वायस**=कौआ। **दाड़िम**=अनार। **इन्द्रायन**=एक प्रकार का कड़वा फल और वृक्ष।